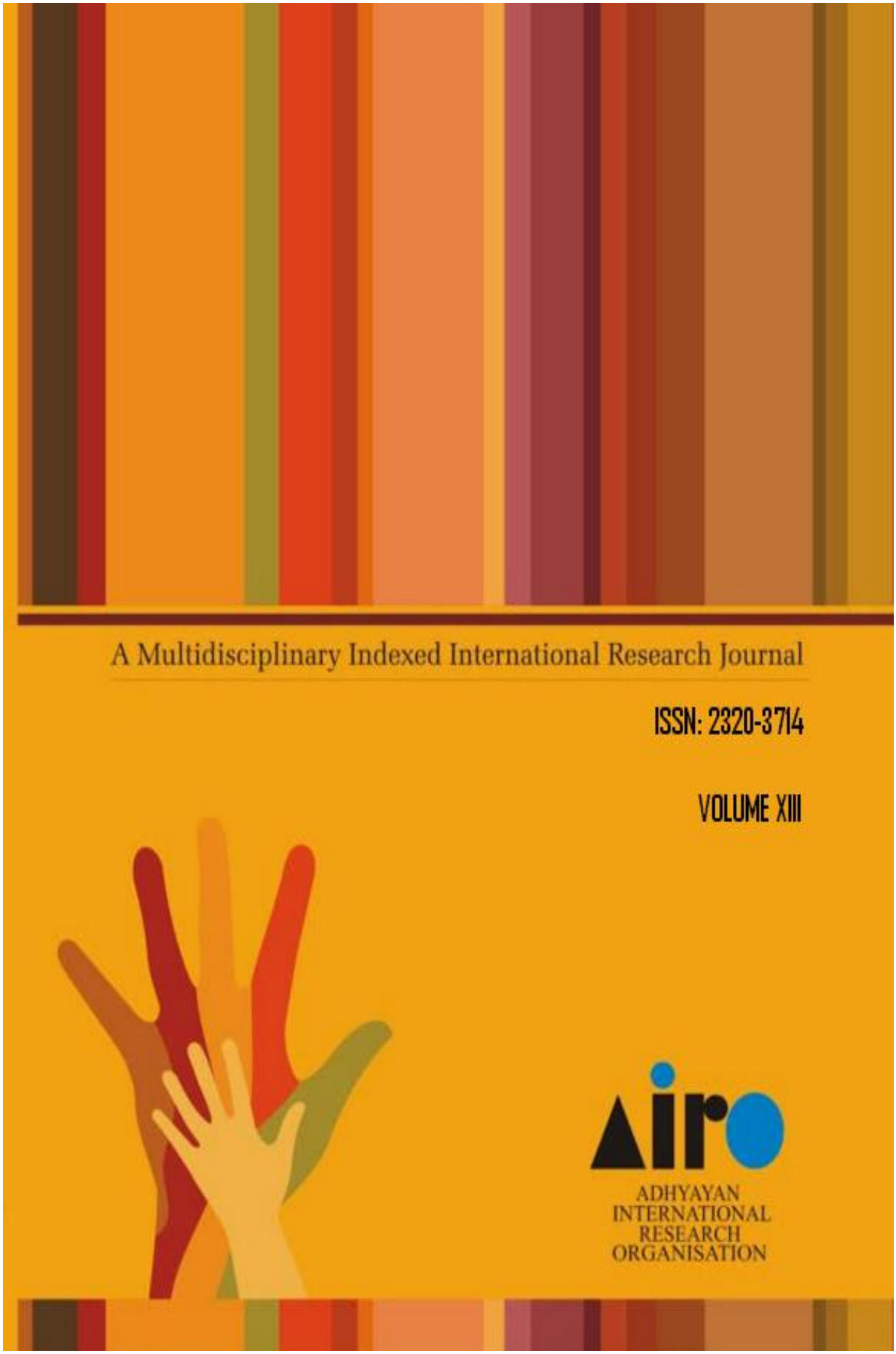
A Multidisciplinary Indexed International Research Journal
ISSN: 2320-3714
VOLUME XIII
Airo
ADHYAYAN
INTERNATIONAL
RESEARCH
ORGANISATION

Airo International Research Journal October, 2017
Volume XIII, ISSN: 2320-3714

सामाजिक चेतना के विविध आयाम

डा. नीलम सुपुत्री श्री राम सिंह,
मकान न. 195–सी, सैक्टर–12,
पंचकुला

Declaration of Author: I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research paper's copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.

सार

राजनैतिक चेतना :

राजनैतिक दृष्टि से आज लोगों में बहुत जागरूकता आ गई है । कुछ लोगों को थोड़े समय के लिए तो मूर्ख बनाया जा सकता है, परन्तु सभी को काफी समय तक मूर्ख बनाया जाना असंभव होता है । आज के युग में अल्पसंख्यकों को भी नकारा नहीं जा सकता । "डार्विन का विकासवाद", "योग्यतम् ही जिये" तो तानाशाही को जन्म देता है लेकिन आज व्यक्ति आँख मूँद कर चलने में विश्वास नही रखता । यदि वह अपने कर्त्तव्यों का पालन करना जानता है तो अपने अधिकारों को भी पहचानता है । आज धर्म, अर्थ, राजनीति के नाम पर लोगों का शोषण नहीं किया जा सकता । आज व्यक्ति अपने सर्वांगीण विकास के लिए जागरूक है । राजनैतिक व्यक्तिवादी चेतना का यही दर्शन है कि व्यक्ति अपने अधिकारों एवम कर्त्तव्यों को अपने आचरण में उतारकर अपना चहुँमुख विकास करे । स्पष्ट है कि व्यक्तिवादी चेतना के निर्माण तत्वों में संस्कृति, विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थ–व्यवस्था तथा राजनीति का महत्वपूर्ण योगदान है ।

व्यक्तिवादी–चेतना :

आज का सजग, चेतन मानव समाज का एक अभिन्न अंग होते हुए भी यह नहीं चाहता कि समाज की इच्छा–आकांक्षाओं को उस पर थोपा जाये । वह एक स्वतन्त्र प्राणी है । वैसे भी व्यक्ति के अधिकारों और स्वतन्त्रता पर बलपूर्वक नियन्त्रण रखना उचित नहीं है । मनुष्य पहले व्यक्ति है, पीछे समाज की ओर उसका पहला रूप ही मौलिक है । आज बौद्विकता और विज्ञान के युग में व्यकित अपने हितों और अधिकारों को भली प्रकार समझता है । आज तर्क के आधार पर सामाजिक बन्धन और परम्परागत रूढ़ियां निरंकुश

होकर व्यक्ति पर शासन नहीं कर सकती । यह व्यक्तिवादी चेतना व्यक्ति को अपना केन्द्र बना कर बड़ी तीव्रता से फैलती जा रही हे । इसमें मनुष्य अपने भले–बुरे का फैसला लेने वाला स्वयं है और अपने कियसे का उतरदायी भी स्वयं ही है । व्यक्ति मूलक व्यापारों का साध्य व्यक्ति है और उसका एकमात्र ज्ञाता व्यक्ति । व्यक्ति जिन्दगी के क्षेत्र में स्वतन्त्रता चाहता है । उसकी व्यैक्तिकता का मूल्य है जिसकी रक्षा की जानी चाहिए पर धर्म ओर नीति का प्रभाव पहले से ही मनुष्य के मन पर है । यह धर्म के क्षेत्र में कभी भी आत्मनिर्भर नहीं रहा, परिणामस्वरूप वह धर्म को आखण्ड संज्ञा के रूप में स्वीकार करता है ।

व्यक्तिवादी चेतना का सबसे अधिक विकास राजनीति के क्षेत्र में हुआ है । अनेक वादों, दलों और सिद्धान्तों के रूप में व्यक्तिवाद खुलकर खेला है । आर्थिक उत्पादन में भी व्यक्तिवादी चेतना ही विद्यमान रही है । व्यक्तिवादी चेतना को अधिक शक्तिशाली बनाने में अर्थ–व्यवस्था, युद्ध और न्याय–निष्ठा ने भी योग दिया है । यह धारणा बनती भी गई कि समाज, राज्य सब कुछ व्यक्तियों के लिए है । व्यक्ति का हित सबसे पहले है इसलिए सबको व्यक्ति हित में सहयोग देना चाहिए । मनुष्य को सब प्रकार के शोषण, दमन, अन्याय और अनीति से बचाकर उसे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण अधिकार दिलाया जाये तभी स्वस्थ और संगठित समाज का निर्माण हो सकता है ।

सांस्कृतिक चेतना :

किसी समाज–जीवन के सारे गुण धर्मों की समष्टि–चेतना का नाम संस्कृति है । यह हमारा सौभाग्य है कि भारत में राजनीतिक चेतना ने सांस्कृतिक चेतना का अनुकरण किया है । जब कभी भी भारतीय के मन में कारणवश, धर्म के प्रति निराशा उत्पन्न हुई तब–तब भारतीय दार्शनिकों और समाज–सुधारकों ने समाज में अपनी संस्कृति और धर्म के प्रति आदर की भावना लौटाई हे । साथ ही साथ यह भी सिद्ध किया है कि विदेशी भौतिकता प्रधान संस्कृति की तुलना में अपनी भारतीय आध्यात्मिकता अधिक संतोष ओर सुखप्रद है । भारतवर्ष में राष्ट्रीय सांस्कृतिक आंदोलन का प्रार्दुभाव 19वीं शताब्दी के सांस्कृतिक आंदोलन के साथ ही हुआ । यही सांस्कृतिक राष्ट्रीयता गान्धीयुग तक आते–आते राजनैतिक राष्ट्रीयता में परिवर्तित हो गई ।

अतीत चेतना :

किसी भी देश और समाज का वर्तमान उसके अतीत पर आधारित होता है । जिस देश का अतीत जितना ही सुसंस्कृत सम्पन्न एवं ऐश्वर्यशाली होगा, उसका वर्तमान उतना ही उज्ज्वल प्रगतिशील और उन्नत होगा । अतीत साहित्य को हम इसलिए पढ़ते हैं कि वह आज भी हमारे जीवन सपन्दन को वेगपूर्ण एवं समृद्ध बनाने की क्षमता रखता हे । अतीत में झांके बिना हम वर्तमान के आगे नहीं बढ़ सकते । अतीत में दबे अमूल्य खजाने को वर्तमान की धरोहर समझना चाहिए । भारत का प्रत्येक साहित्यकार अतीत का ऋणी है । हमारी आर्थिक तथा राजनैतिक क्रान्तियों, हमारी धार्मिक, नैतिक, शिक्षाएं तथा विश्वास और हजारों विचार, पद्धतियाँ, हमारे लिए अमूल्य निधियाँ हैं । अतीत से प्रेरित हो वर्तमान में प्रतिकूल परिस्थितियों में जुझते हुए भी हम अपने लिए सुन्दर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं ।

आदर्श–चेतना :

व्यक्ति समाज की इकाई है । व्यक्ति जीवन की स्वतन्त्र स्वीकृति पाकर समाज कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकता है । सामाजिक लोक–मंगल की भावना से प्रेरित व्यक्ति ही अपने जीवन में आदर्श–चेतना की प्रतिष्ठा स्थापित करता है । यह चेतना जब व्यक्ति केन्द्रित हो, आत्म–बोध को आधार बनाकर विकसित होती है, तब यह प्रवृति व्यक्ति में व्यक्तिवादी जीवन दर्शन को प्रश्रय देती है । क्योंकि व्यक्ति का आदर्श व्यकित और समाज के सहज सम्बन्धों की भूमि पर ही प्रतिष्ठित है जो व्यक्ति ही नहीं, बल्कि उनकी सामाजिकता में ही संभव है । आदर्श चेतना जीवन के बिखराव मे, वस्तु, जगत की विसंगति, विरूपता और अवसादग्रस्तता में निराश होते हुए व्यक्ति मन में आशा का संचार करती है । अनेकता में एकता का सुत्रपात करते हुए समाज में कल्याणकारी भूमिका अदा करती है ।

यथार्थ–चेतना :

कलाकार अर्न्तबाह्यय जगत् को जब जिस रूप में देखे और उसे उसी रूप में हमारे सामने रख दे तो यह कलाकार की यथार्थ–चेतना है । पाप–पुण्य, सुख–दुख, धूप–छाँव के ताने–'बाने में फिर भी वह अपनी कल्पना के सुन्दर रंग लगा ही देता है और जिन्दगी को जीने योग्य बनाने का सतत् प्रयत्न करता है । "साहित्यकार केवल वस्तुओं के बाहरी

सौन्दर्य पर ही मुगध नहीं होता अपितु वह अपनी सौन्दर्य चेतना के आधार पर जड़ वस्तुओं में भी आन्तरिक सौन्दर्य की अनुभूति करता है ।" साहित्यकार भौतिक और बौद्धिक सत्यों का सहारा अवश्य लेता है किन्तु वह अपने ही भाव, सत्य में पूर्ण विश्वास रखता है । भावना का सत्य ही साहित्यकार का सत्य है, जिसमें रंग कर वैज्ञानिक और दार्शनिक का सत्य मनोरम बन जाता है । घटित सत्य के रहस्य का उदघाटन कर साहित्यकार अपनी यथार्थ चेतना का परिचय देता है । यथार्थ चेतना सम्पन्न साहित्यकार सत्य–असत्य, सुन्दर–असुन्दर के तर्क–वितर्क से ऊपर उठकर नीर–क्षीर विवेकी हंस के समान सत्य का अन्वेषण करता है । साहित्यकार जीवन के वास्तविक स्वरूप को हमारे सामने लाता है । सत्य चाहे जितना भी नगन और कठोर क्यों न हो वह उसे बड़े मर्यादित ढ़ंग से हमारे सामने प्रस्तुत करता है । यथार्थ–चेतना वास्तव में सत्य, न्याय और नीति

वर्तमान–चेतना : वर्तमान–चेतना हमारी जागृति का प्रतीक है । इसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्रहित के सथी सहयोगी तत्त्व राजनीति, धर्म, अर्थ, नीति तथा विज्ञान आ जाते हैं । यह वर्तमान चेतना व्यक्ति और राष्ट्री को गो गति प्रदान करने

निष्कर्ष :

उपरोक्त विवेचन से यह सहज ही स्पष्ट है कि 'व्यक्तिवाद' समाज के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण की स्थापना है । समाज स्वाभाविक अस्तित्व नहीं है, प्रत्युत स्वतन्त्र व्यक्तियों का योग है । अतः समृष्टि शक्ति को व्यक्ति पर उसके अधिकारी और स्वतन्त्रताओं पर बल प्रयोग का नैतिक अधिकारी नहीं है । व्यष्टिमूलक व्यापारों का साध्य व्यक्ति हित है और उसका एक मात्र ज्ञाता व्यक्ति है ।